

# अव्यक्त, आकारी, डबललाईट, फरिश्तेपन की अवस्था



ब्रह्माकुमारीझ  
प्रस्तुति



ब्र. कु. प्रफुलचंद्र

# अव्यक्त फ़रिश्तेपनकी अवस्था की विशेषताए

- ❖ यह अवस्था स्थूल शरीर के भान से सम्पूर्ण रूप से मुक्त, साकारी दुनिया से उपराम अवस्था है
- ❖ यह आत्मा की सूक्ष्म प्रकाश सर्जित सूक्ष्मशरीर में सूक्ष्म अवस्था है
- ❖ इसीलिए यह आत्मा की डबल लाईट अवस्था है। वजन रहित-प्रकाश सर्जित
- ❖ अव्यक्त फरिश्तेपन की अवस्था आत्मा की आकारी अवस्था है
- ❖ फर्श से उपराम और अर्श में स्थित अवस्था है
- ❖ फरिश्ता अर्थात जिसके एक बाप के अलावा सब रिश्ते समाप्त हो चुके हो
- ❖ अव्यक्त स्थिति में समय का बंधन नहीं होता यह कालातीत अवस्था है
- ❖ इस अवस्था में आकारी सूक्ष्मशरीर के माध्यम से आत्मा साकारी एवं आकारी दुनिया में परिभ्रमण एवं कही पर भी वहन वा आवागमन कर सकती है
- ❖ इसीलिए सूक्ष्म शारीर को अन्तःवाहक शरीर भी कहा जाता है



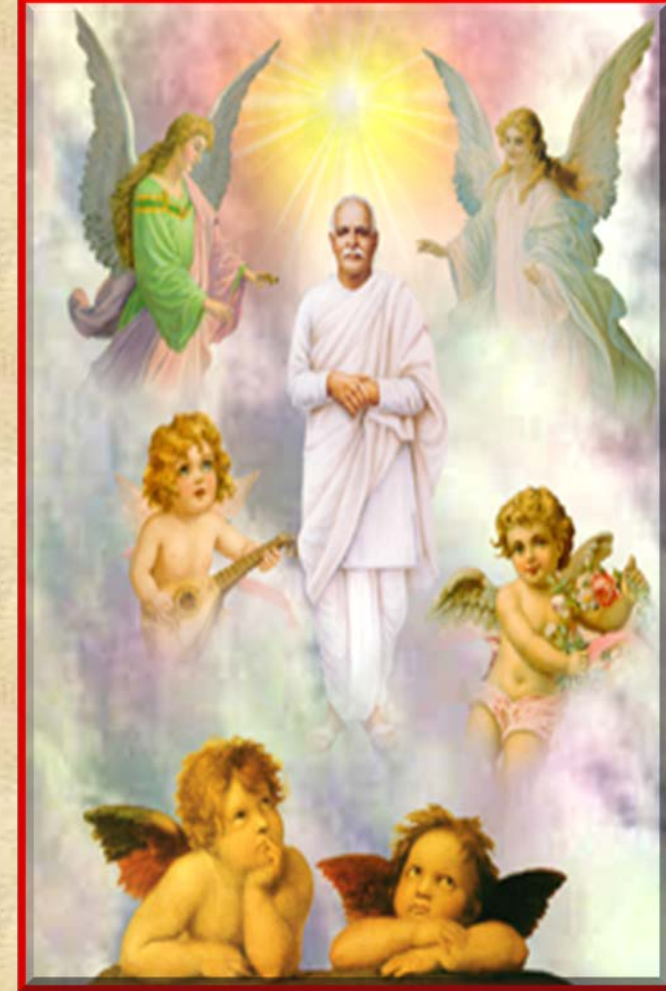
# सूक्ष्मशरीर का अस्तित्व विज्ञान द्वारा भी प्रमाणित

- परामनोविज्ञान, पारभौतिक विज्ञान, तबिबी विज्ञान एवं आध्यात्मिक विज्ञान क्षेत्रों में हुए प्रमाणित संशोधनों से भी अब स्पष्ट हो चुका है कि हमारे स्थूल शरीर के साथ वैश्विक ऊर्जा से सर्जित, स्वयं प्रकाशित सूक्ष्म शरीर (Astral Body) भी संलग्न है
- यह सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर और आत्मा के बीच अनुसंधान प्रस्थापित करने वाला मध्यवर्ती शरीर है
- क्लीरियन फोटोग्राफी एवं स्पिरिट फोटोग्राफी से सूक्ष्म शरीर के फोटो भी लिए जा सकते हैं
- हमारे ऋषि मुनिओं ने भी अपनी तपस्या द्वारा सूक्ष्म शरीर को प्रत्यक्ष किया है
- Near Death Experiences, Out of Body Experiences जैसी घटनाओं ने भी सूक्ष्म शरीर को प्रमाणित किया है



# संगमयुग में अव्यक्त फरिस्तेपन की अवस्था का महत्व

- राजयोग के प्रत्येक अभ्यासु के लिए यह अवस्था योगानुभूति एवं योग में प्रयोग के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है ।
- यह सूक्ष्म आकारी स्वरूप के माध्यम से ही हम सूक्ष्मवतन में स्थित हो सकते है ।
- स्वपरिवर्तन एवं विश्वपरिवर्तन के लिए हम जो मनसा सेवा करते है उसमे भी हमारे अव्यक्त फरीशतेपन का विशेष महत्व है।
- हमारा सूक्ष्म शरीर हमारा अन्तःवाहक – वाहन भी है जिससे हम अंतरिक्ष में कही पर भी वहन वा परिभ्रमण कर सकते है और सूक्ष्मयात्रा – Estral Travel का आनंद लूट सकते हैं ।
- प्यारे बाबा के साथ के संबंधो के अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति के लिए एवं हर सम्बन्ध को निभाने के लिए भी हमारी यह अवस्था का विशेष रोल है ।



# फरिस्तेपन की अवस्था में स्थित होने के विविध अभ्यास

१. सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से आहिस्ता आहिस्ता अलग करना – Method of Separation
२. क्रमशः पाँव से लेकर मस्तक तक स्थूल शरीर को सूक्ष्म में परिवर्तित करना – Method of Conversion
३. अपने पूर्ण डबल लाईट फरिस्ते स्वरूप का लाईट के कार्ब में प्रक्षेपण करना – Method of Projection
४. एक क्षण में स्थूल शरीर के भान को भूल कर अपने आकारी फरिस्ता स्वरूप में स्थित हो जाना, अभी अभी साकारी अभी अभी आकारी  
Spontaneous or Instantaneous Method



# अव्यक्त फरिस्ता स्वरूप मे स्थित होने के विधान

- ❖ सब कुछ बाप के हवाले कर डबल लाईट रहेना,
- ❖ कमल पुष्प के समान न्यारा और प्यारा रहेना
- ❖ वस्तु, व्यक्ति, पदार्थ, परिस्थिति के आकर्षण से दूर रहेना
- ❖ इच्छा मात्रं अविद्या स्थिति में स्थित रहेना, बेहद के वैरागी बन कर रहेना
- ❖ ड्रामा के हर सिन को साक्षी द्रष्टा बन साक्षी भाव से देखना
- ❖ लौकिक एवं अलौकिक सम्बन्धो से उपराम हो सर्व सम्बन्ध बाप से जोड़ना
- ❖ अपनी स्वस्मृति में, स्वरूप में, स्वधर्म में, स्वलक्ष में स्थित रहने का बार बार अभ्यास करते रहेना
- ❖ व्यर्थ संकल्प, व्यर्थ बोल, व्यर्थ कर्म, व्यर्थ संपर्क-सम्बन्ध से दूर रहेना और समय को व्यर्थ नहीं गवाना



ॐ शांति



**Thanks to Baba & All of You**